बौद्ध दर्शन विभाग

श्रमण विद्या संकाय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विभागाध्यक्ष

प्रो0 रमेश प्रसाद

प्रस्तोता

प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय

श्रमण विद्या संकाय

बौध्द दर्शन

जैन दर्शन

पालि एवं थेरवाद

प्राकृत एवं जैनागम

संस्कृत विद्या

ध्येय एवं दृष्टि (विजन एवं मिशन)

- बौध्द दर्शन में न केवल शास्त्री, आचार्य तथा विद्यावारिधि की उपाधि देना है बल्कि इस विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त कराना है।
- बौध्द विद्या के सैध्दान्तिक पक्ष के साथ - साथ व्यवहारिक ज्ञान का भी अध्ययन कराना, जैसे विपस्सना ध्यान आदि।
- सनातन परम्परा के एक मजबूत अंग होनें का बोध कराना।
- बौध्द साहित्य के मूल स्रोतों का अध्ययन कर उनमें निहित ज्ञान को समाज तक पहुँचाना।
- नालन्दा के प्राचीन बौध्द ग्रन्थों का अनुवाद एवं व्याख्या।
- शोध कार्य को बढावा देना एवं नई खोजों को प्रोत्साहित करना।

विभाग का इतिहास

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में बौध्द दर्शन विषय में संस्कृत कि उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए संस्कृत वाङ्मय के बौध्द विषयी ग्रन्थों के पठन - पाठन हेतु बौध्द दर्शन विभाग का गठन सन् 1957 में हुआ एवं आधिकारिक रूप से सन् 1958 को विधिवत प्रारम्भ हुआ। इसमें आरम्भिक काल से अब तक आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय, आचार्य रामशंकर त्रिपाठी, डॉ. रमेश कुमार द्विवेदी, प्रो. थुबतन छोसडुब, प्रो. यदुनाथ दुबे ने अध्यापन कार्य किये।

- **विभागीय अध्यापक** – आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय, आचार्य रामशंकर त्रिपाठी, डॉ. रमेश कुमार द्विवेदी, प्रो. थुबतन छोसडुब, प्रो. यदुनाथ दुबे, प्रो. हरिशंकर पाण्डेय, प्रो. हर प्रसाद दीक्षित तथा प्रो. रमेश प्रसाद ने क्रमश: विभागाध्यक्ष का दायित्व निर्वहन किया।
- **विभागाध्यक्ष** - उपर्युक्त सभी स्थायी अध्यापकों ने श्रमण विद्या संकाय में अध्यक्ष पद को भी संभाला।
- **शोध निर्देशन** - सभी विभागीय अध्यापकों ने अपने निर्देशन में शोध छात्र छात्राओं को शोध उपाधि दिलायी।

शैक्षणिक कार्यक्रमों की सूची

- आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला।

विभागीय समितियों का विवरण

1. विभागीय समिति
2. अध्ययन बोर्ड
3. अनुसंधानोपाधि समिति

शिक्षण विधि विवरण

1. परम्परागत विधि
2. व्याख्यान विधि
3. चर्चा विधि
4. ध्यान विधि
5. समस्या समाधान विधि
6. सहयोगी शिक्षण विधि

विगत पाँच वर्षों में पंजीकृत छात्रों की सूची

स्नातक, स्नातकोत्तर

क्र.सं.	सत्र	शास्त्री प्रथम वर्ष I,II सेमे.		शास्त्री द्वितीय वर्ष III, IV सेमे.		शास्त्री तृतीय वर्ष V,VI सेमे.		आ. I, II सेमे.		आ. III, IV सेमे.		कुल छात्रों की संख्या
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	2018-19	04	04	12	06	05	09	27	05	12	05	89
2	2019-20	02	03	03	02	12	06	10	04	20	04	66
3	2020-21	03	01	02	01	01	02	04	01	07	04	26
4	2021-22	02	01	03	01	01	01	05	01	07	01	23
5	2022-23	01	01	01	00	03	01	04	02	06	01	20

स्वीकृत एवं रिक्त पद

पद	स्वीकृत	पूरित	रिक्त
प्रोफेसर	01	00	01
एसोसिएट प्रोफेसर	01	00	01
असिस्टेण्ट प्रोफेसर	01	00	01

कार्यरत अध्यापकों का विवरण क्रमशः (शैक्षणिक योग्यता सहित)

अध्यापक नाम	योग्यता	धारित पद	विशिष्टता का क्षेत्र	अध्यापन अनुभव	निर्देशित शोध छात्र
डॉ. लेखमणि त्रिपाठी	विद्यावारिधि (Ph.D)	अतिथि अध्यापक	बौध्द दर्शन	08	00
डॉ. राजीव कुमार नेगी	विद्यावारिधि (Ph.D)	अतिथि अध्यापक	बौध्द दर्शन	01	00

विगत पाँच वर्षों में अध्यापकवार शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण

अध्यापक	लेख	कार्यशाला	सेमिनार राष्ट्रीय /अन्तर्राष्ट्रीय	सत्र
डॉ. लेखमणी त्रिपाठी	02	03	06 / 02	2019 - 2024
डॉ. राजीव कुमार नेगी	04	03	09/03	2019 - 2024

विभागीय कार्यक्रम

- बुध्द जयन्ती ।
- बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती ।
- महावीर जयन्ती ।

छात्रवृत्ति एवं पुरस्कार विकरण

क्र.सं.	छात्र नाम	विभाग नाम	सत्र	संस्थान	पदक/गोल्ड मेडल
1.	कुमारी पुजा	बौध्द दर्शन	2019 - 20	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल
2.	सूरजभान सिंह	बौध्द दर्शन	2020 - 21	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल
3.	रविशंकर पाण्डेय	बौध्द दर्शन	2021 - 22	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल

शोध छात्रों की स्थिति (विगत पाँच वर्षों की)

क्र.सं.	शोधार्थी	पंजीकरण	दिनांक	उपाधि प्राप्त	निर्देशक
1.	श्री पुरुषोतम मिश्रा	4399/6000	28/12/2017	08/06/2024	प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी
2.	रामरेश त्रिपारी	4570/6171	29/01/2018	30/01/2024	प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी
3.	सुवण्णा	4393/5994	02/12/2017	08/11/2023	प्रो. हरिशंकर पाण्डेय
4.	वण्णासारा	4392/5993	09/12/2017	10/11/2023	प्रो. हरिशंकर पाण्डेय

विभागीय सुविधाएँ (कक्षा, पुस्तकालय, आईसीटी इत्यादि)

- विभाग में तीन कक्ष हैं।
- पुस्तकों की प्रभूत व्यवस्था।

विभागीय उत्तम गतिविधि (बेस्ट प्रैक्टिस)

- अनेक सेमिनारों का आयोजन |

विश्वविद्यालय में विभाग की भूमिका एवं योगदान

श्रमण विद्या संकाय एक मात्र ऐसा संकाय है जहाँ पर बौध्द दर्शन, जैन दर्शन, पालि एवं थेरवाद, प्राकृत एवं जैनागम तथा संस्कृत विद्या विभाग संचालित रूप से चलता है । इस संकाय के अन्तर्गत बौध्द दर्शन का अध्ययन - अध्यापन एवं शोध का कार्य किया जाता है । अध्ययन - अध्यापन का माध्यम संस्कृत भाषा है । संस्कृत बौध्द दर्शन का साहित्य तथा प्रारम्भिक बौध्द दर्शन का अध्ययन - अध्यापन मूल नालन्दा परम्परा से चला आ रहा बौध्द दर्शन के साथ कराया जाता है । इस विभाग में देश – विदेश और अन्य राज्य के छात्र अध्ययन करते हैं ।

विभाग के मजबूत पक्ष

❖ सम्पन्न एवं समृद्ध विद्या - प्रयासरत ।

❖ प्राचीन भारतीय - संस्कृति के प्राण तत्वों – संस्कृत - प्राकृत - पालि भाषा एवं बौध्द दर्शन

(प्राच्यवाङ्मय) में से एक ।

❖ सबके लिए उपयोगी, सबके विकास, संरक्षण के साथ राष्ट्र संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण अवस्थापन ।

विभाग की संभावनाएँ

1. विभिन्न स्थानों पर - विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, माध्यमिक - शिक्षा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की संभावनाएं।

विभाग की अपेक्षित कार्य एवं संभावनाएँ

1- विभागीय भवन - निर्माण की आवश्यकता।

2- विभाग में आचार्य कक्ष, अध्यापन कक्ष की सम्यक व्यवस्था।

3- विभाग का प्रचार - प्रसार।

संभावनाएँ

1- विभाग में अपेक्षाकृत छात्रों की संख्या कम होना।

2- यहां पर दूर - दराज के छात्र पढ़ने आते है। वहां पर बौध्द दर्शन का प्रचार - प्रसार नहीं है। यहां इस विश्वविद्यालय में साहित्य – व्याकरण - वेद - ज्योतिष आदि विषयों का ध्यान करने छात्र आते हैं।

3- इन कमजोरीयों को दूर करने के लिए विभाग प्रयासरत है। अपनी उपलब्धियों का छात्रों के बीच संस्थापन कर छात्राकर्षण का कार्य विभाग करता है।

धन्यवाद

जैन दर्शन विभाग

श्रमण विद्या संकाय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विभागाध्यक्ष

प्रो0 रमेश प्रसाद

प्रस्तोता

प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय

विभाग का इतिहास

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थापना काल 1958 ई. से ही जैनदर्शन विभाग संस्थापित एवं संचालित है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के श्रमणविद्या संकाय के अंतर्गत एक स्वतंत्र विभाग है। यह एकल पदीय है। प्रथम आचार्य पं. अमृत लाल जैन (1958 - 1977 ई0) थे।

द्वितीय आचार्य प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी (1979 –2008 ई0) थे।

सत्र 2008 से अतिथि अध्यापक के द्वारा अब तक अध्यापन कार्य चल रहा है। वर्तमान में अतिथि अध्यापक डॉ. श्रवण कुमार के द्वारा पठन - पाठन का कार्य नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है।

इस विभाग में मुख्यता जैनदर्शन, जैन सिध्दान्त, जैन तत्व जैनागम, जैनाचार आदि का विस्तृत अध्ययन अध्यापन होता है। इसमें निम्नलिखित पाठ्य संचालित हैं।

पाठ्यक्रम - शास्त्री, आचार्य एवं विद्यावारिधि पाठ्यक्रम

ध्येय एवं दृष्टि

- जैन शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन।
- जैन - तत्व तथा दार्शनिक गुणवत्ता का विकास, प्रचार एवं विस्तार।
- जैनदर्शन विषय में योग्य छात्रों को तैयार करना।
- जैनदर्शन को समाजोपयोगी बनाना।

भविष्यत्कालीन योजनाएं -

- जैनदर्शन विभाग का विकास।
- सरकार से विभागीय पद बनाने का अनुरोध।
- जैनभवन के निर्माण के लिए उद्यम करना।
- जैन पाण्डुलिपियों शास्त्रों पर शोध एवं प्रकाशन।
- जैनदर्शन में अधिकाधिक सरकारी विभागों में पदों का संवर्धन कर योग्य विद्यार्थियों को प्रतिष्ठापित करना।
- जैनकला, संस्कृति आदि अध्ययन एवं विकास की योजना बनाना।

विभागीय पाठ्यक्रम (Programmes)

- शास्त्री
- आचार्य
- विद्यावारिधि
- वाचस्पति

समितियों का विवरण

1. विभागीय समिति
2. अध्ययन बोर्ड
3. अनुसंधानोपाधि समिति

शिक्षण विधि विवरण

1. सर्वप्रथम छात्र में उत्साह और रुचि संवर्द्धन करना।
2. पाठ्यक्रम के विषय में सहजता सरलता एवं सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाना।
3. मूलग्रंथ का पाठ अन्वय शब्दार्थ अर्थ - विमर्शन साहित्यि दार्शनिक विमर्शन सहित।
4. पूर्व में अध्यापित विषयों का स्मरण।
5. गृह - कार्य (विषय से सम्बद्ध)।

विगत पाँच वर्षों में पंजीकृत छात्रों की सूची

स्नातक, स्नातकोत्तर

क्र.सं.	सत्र	शास्त्री प्रथम वर्ष/ I,II सेमे.		शास्त्री द्वितीय वर्ष/ III, IV सेमे.		शास्त्री तृतीय वर्ष/ V,VI सेमे.		आ. I, II सेमे.		आ. III, IV सेमे.		कुल छात्रों की संख्या
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	2019-20	02	00	02	00	02	00	06	02	04	01	19
2	2020-21	01	00	00	00	02	00	05	00	05	00	13
3	2021-22	04	03	02	00	01	00	06	00	06	00	22
4	2022-23	01	00	00	00	01	00	03	00	05	00	10
5	2023-24	06	00	01	00	00	00	01	00	00	00	08

स्वीकृत एवं रिक्त पद

पद	स्वीकृत	पूरित	रिक्त
असिस्टेण्ट प्रोफेसर	1	0	1

कार्यरत अध्यापकों का विवरण क्रमश:

(शैक्षणिक योग्यता सहित)

अध्यापक नाम	योग्यता	धारित पद	कार्य	अध्यापन अनुभव	जन्मतिथि	शोध /लेख
डॉ. श्रवण कुमार	जे.आर.एफ/एस.आर.एफ/विद्यावारिधि (Ph.D)	अतिथि अध्यापक	नैक कार्य, परीक्षा कार्य, दीक्षांत महोत्सव कार्य, विभिन्न संगोष्ठी एवं सेमिनार का कार्य।	02 वर्ष	05/08/1992	02

विभागीय कार्यक्रम

1. बुध्द जयन्ती।

2. बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।

3. महावीर जयन्ती।

विभागीय कार्यक्रम

छात्र समस्या समाधान एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रकाश साप्ताहिक विचार गोष्ठी विभिन्न जयन्तियों का आयोजन विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्ताराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन।

विभागीय सुविधाएँ

- ❖ एक कक्ष विभाग में।
- ❖ पुस्तकों की प्रभूत व्यवस्था।

विभागीय उत्तम गतिविध (बेस्ट प्रैक्टिस)

- ❖ जे०आर०एफ०, नेट की तैयारी।
- ❖ अनेक सेमिनारों का आयोजन।

विश्वविद्यालय में विभाग की भूमिका एवं योगदान

- ❖ विश्वविद्यालय के विकास, उन्नयन – प्रतिष्ठा - सम्बर्द्धन तथा महनीयता - संस्थापन में विभाग के आचार्य एवं अन्य लोग (विभागीय परिवार) श्रद्धा समृद्ध ।
- ❖ विश्वविद्यालय के लिए आवश्यक सभी कार्यों को संपन्न करना ।
- ❖ मिले दायित्व को समय पर पूरा करना ।

विभाग के मजबूत पक्ष

- ❖ सम्पन्न एवं समृद्ध विद्या प्रयासरत ।
- ❖ प्राचीन भारतीय - संस्कृति के प्राण तत्वों - संस्कृत - प्राकृत - पालि भाषा एवं जैन दर्शन (प्राच्यवाङ्मय) में से एक ।
- ❖ सबके लिए उपयोगी, सबके विकास, संरक्षण के साथ राष्ट्र संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण अवस्थापन ।

विभाग की संभावनाएं

1. विभिन्न स्थानों पर - विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, माध्यमिक - शिक्षा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की संभावनाएं।
2. जैनदर्शन विभाग का कक्ष - आसन एक सिद्ध पीठ है। इसमें मनोयोग से जो कार्य करता है, वह पूर्ण हो जाता है।

विभाग की भावी योजनाएँ

1. जैनदर्शन के विभिन्न शास्त्रों आगम, चरितकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य, सट्टक, शिलालेख साहित्य, सिद्धान्त साहित्य, दार्शनिक साहित्य आदि का अध्ययन अध्यापन तथा शोध कार्य।
2. जनमानस तक जैनदर्शन की महनीयता को प्रतिष्ठापित करना।
3. जैनदर्शन के छात्रों को अधिकाधिक वृत्त - जीवन भरण संसाधन उपलब्ध कराने में सहायता करना।
4. शोधकार्य, प्रकाशनादि करना।
5. विभिन्न राष्ट्रीय अन्ताराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन करना।
6. जे0आर0एफ0/नेट तथा अन्य प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए छात्रों को योग्य बनाना।

विभाग की अपेक्षित कार्य

- ❖ विभागीय भवन - निर्माण की आवश्यकता ।
- ❖ विभाग में आचार्य कक्ष, अध्यापन कक्ष की सम्यक व्यवस्था ।
- ❖ विभाग का प्रचार - प्रसार ।

विभाग का कमजोर पक्ष

- ❖ विभाग में अपेक्षाकृत छात्रों की संख्या कम होना ।
- ❖ विभागीय कार्यालय का अभाव

धन्यवाद

पालि एवं थेरवाद विभाग

श्रमण विद्या संकाय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विभागाध्यक्ष

प्रो0 रमेश प्रसाद

प्रस्तोता

प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय

विभाग का इतिहास

- ❖ पालि एवं थेरवाद विभाग का संस्थापना काल 1958 से श्रमण विद्या संकाय के अन्तर्गत संचालित है।
- ❖ इसमें आरम्भिक काल से अब तक भिक्षु जगदीश काश्यप, आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय, प्रो. लक्ष्मी नारायण तिवारी, प्रो. ब्रम्हदेव नारायण शर्मा, प्रो. हर प्रसाद दीक्षित तथा प्रो. रमेश प्रसाद ने अध्यापन कार्य किया तथा उपरोक्त सभी ने विभागाध्यक्ष तथा श्रमण विद्या संकायाध्यक्ष का भी दायित्व निर्वहन किया।
- ❖ श्रमण विद्या संकाय में स्थानापन्न विभागाध्यक्ष के रूप में प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी ने 02-01-2010 से 18-10-2010 तक दायित्व निर्वाहन किया।
- ❖ सभी विभागीय अध्यापकों ने अपने निर्देशन में शोध छात्र छात्राओं को शोध उपाधि दिलायी।

ध्येय

1. पालि विद्या सनातन परम्परा का एक अंग है - इसका लोगों को बोध कराना।

2. पालि विद्या का संरक्षण एवं संवर्धन करना।

3. पालि भाषा में निहित बौध्द विद्या को समाज में प्रचार- प्रसार करना।

दृष्टि

1. शास्त्री एवं आचार्य की कक्षाओं में पालि भाषा से अधिक से अधिक छात्रों का नामांकन कराना।

2. बौध्द विद्या के सैध्दान्तिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान का भी अध्ययन कराना।

3. विपस्सना के माध्यम से बौध्द ज्ञान के मूल ध्येय तक पहुँचाना।

4. पालि भाषा के ग्रन्थों को हिन्दी भाषा में अनुवाद कर लोगों को उपलब्ध कराना।

विभागीय पाठ्यक्रम (Programmes)

- ❖ शास्त्री
- ❖ आचार्य
- ❖ विद्यावारिधि
- ❖ वाचस्पति

समितियों का विवरण

1. विभागीय समिति
2. अध्ययन बोर्ड
3. अनुसंधानोपाधि समिति

शिक्षण विधि

1. व्याख्यान विधि
2. चर्चा विधि
3. ध्यान विधि
4. समस्या समाधान विधि
5. सहयोगी शिक्षण विधि
6. विभज्य विधि

विगत पाँच वर्षों में पंजीकृत छात्रों की सूची स्नातक, स्नातकोत्तर

क्र.सं.	सत्र	शास्त्री प्रथम वर्ष/ I,II सेमे.		शास्त्री द्वितीय वर्ष/ III, IV सेमे.		शास्त्री तृतीय वर्ष/ V,VI सेमे.		आ. I, II सेमे.		आ. III, IV सेमे.		कुल छात्रों की संख्या
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	2019-20	02	02	02	00	02	00	17	03	09	01	38
2	2020-21	01	00	02	01	02	00	06	02	02	02	18
3	2021-22	01	00	01	00	01	01	02	01	04	01	12
4	2022-23	03	00	00	00	01	00	09	01	14	01	29
5	2023-24	05	00	01	00	00	00	09	00	09	02	26

स्वीकृत एवं रिक्त पद

पद	स्वीकृत	पूरित	रिक्त
प्रोफेसर	01	00	01
एसोसिएट प्रोफेसर	00	00	00
असिस्टेण्ट प्रोफेसर	02	01	01

कार्यरत अध्यापकों का विवरण (विगत पाँच वर्षों की सूची)

अध्यापक नाम	योग्यता	धारित पद	विशिष्टता का क्षेत्र	अध्यापन अनुभव	निर्देशित शोध छात्र
प्रो. रमेश प्रसाद	एम.ए., एम.फिल., पी.एच. डी.	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष	थेरवाद अभिधम्म	27	24
प्रो. हर प्रसाद दीक्षित	आचार्य, विद्यावारिधि	प्रोफेसर	थेरवाद बौध्दधम्म	30	19
डॉ.राजेश कुमार श्रीवास्तव	आचार्य, विद्यावारिधि	अतिथि अध्यापक	थेरवाद बौध्दधम्म	13	00
डॉ . विश्वदत्त	आचार्य, विद्यावारिधि	अतिथि अध्यापक	पालि	2 माह	00
डॉ. उपेन्द्र कुमार	आचार्य, विद्यावारिधि	अतिथि अध्यापक	बौध्द दर्शन	01	00
डॉ. सूर्यभान कुमार	आचार्य, विद्यावारिधि (NET, JRF,SRF)	अतिथि अध्यापक	पालि एवं प्राकृत	01	00

वर्तमान में कार्यरत अध्यापकों का विवरण

अध्यापक नाम	योग्यता	धारित पद	विशिष्टता का क्षेत्र	अध्यापन अनुभव
प्रो० रमेश प्रसाद	एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी.	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष	थेरवाद अभिधम्म	27 वर्ष
डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव	आचार्य, विद्यावारिधि	अतिथि अध्यापक	थेरवाद बौध्दधम्म	14 वर्ष
डॉ. सूर्यभान कुमार	आचार्य, विद्यावारिधि (JRF)	अतिथि अध्यापक	पालि एवं प्राकृत	01 वर्ष

विगत पाँच वर्षों में विभागीय प्रकाशन

सम्पादक	पुस्तक/ पत्रिका	सत्र	ISSN/ ISBN	प्रकाशक
प्रो. रमेश प्रसाद	पालिपटिपदा	2021	....	पालि सोसाइटी आफ इण्डिया
	धर्मदूत पत्रिका VOL - 84 से 90 तक	2018 से 2024 तक	2347-3428	महाबोधि सोसाइटी आफ इण्डिया
प्रो. हर प्रसाद दीक्षित	श्रमण विद्या (संकाय पत्रिका)	2023	978-93-94343-01	सम्पूर्णान्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विगत पाँच वर्षों में विभागीय शैक्षिक उपलब्धि

अध्यापक	शोध/लेख	कार्यशाला	सेमिनार राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय	सत्र
प्रो. रमेश प्रसाद	14	10	25 / 13	2018 से 2024 तक
प्रो. हर प्रसाद दीक्षित	02	00	04 / 02	2018 से 2024 तक

विगत पाँच वर्षों में विभाग को प्राप्त सम्मान

नाम	सम्मान	पुरस्कारित संस्था	सत्र
प्रो. रमेश प्रसाद	विद्वत् भूषण सम्मान	अखिल भारतीय विद्वत परिषद् ।	2019
प्रो. रमेश प्रसाद	प्रशस्ति पत्र	कुलपति – सं. सं. वि. वि., वाराणसी ।	2021
प्रो. रमेश प्रसाद	प्रशस्ति पत्र	उत्तर प्रदेश सरकार ।	2021
प्रो. रमेश प्रसाद	संकल्प से सिध्दि सम्मान	कैरियर प्लस शिक्षण संस्थान, दिल्ली ।	2022
प्रो. रमेश प्रसाद	धम्म सेवा सम्मान	धम्म शिक्षण केन्द्र, सारनाथ ।	2022
प्रो. हर प्रसाद दीक्षित	विद्वत् भूषण सम्मान	श्री आशुतोष शिव तपोधाम सन्यास आश्रम, टाऊजी म्यांमार ।	2019
प्रो. हर प्रसाद दीक्षित	काशी विद्वत् भूषण सम्मान	अक्षर परुषोत्तम दर्शनपीठ अक्षरधाम, दिल्ली ।	2019

विभागीय कार्यक्रम

- आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला।
- बुद्ध जयन्ती।
- बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।
- महावीर जयन्ती।

उपाधि प्राप्त शोध छात्रों का विवरण(विगत पाँच वर्षों का)

क्र.सं.	शोधार्थी	पंजीकरण	दिनांक	उपाधि प्राप्त	निर्देशक
1.	फ्रा. सोमसाक वण्णसन	4312/5913	11-12-2013	25–03-2019	प्रो. रमेश प्रसाद
2.	श्री नन्द रतन	4266/5867	18-01-2013	29-11-2019	प्रो. रमेश प्रसाद
3.	श्री फ्रा. समान नागाओफो	4313/5914	11-12-2013	03-12-2022	प्रो. हर प्रसाद दीक्षित
4.	श्रीमती माधुरी कुशवाहा	4350/5951	21-08-2015	22-12-2022	प्रो. रमेश प्रसाद
5.	श्री तेजवन्त	4358/5959	01-11-2015	20-12-2024	प्रो. हर प्रसाद दीक्षित
6.	श्री नन्दासीरि	4387/5988	27-12-2017	19-06-2024	प्रो. रमेश प्रसाद
7.	श्री इन्दोभास	4390/5991	28-12-2017	13-04-2024	प्रो. रमेश प्रसाद
8.	श्री विमल	4391/5992	28-12-2017	03-04-2024	प्रो. हर प्रसाद दीक्षित
9.	श्री भिक्खू मूलचन्द नाग	4388/5989	12-12-2017	24-07-2024	प्रो. रमेश प्रसाद
10.	श्री स्वतंत्र कुशवाहा	4389/5990	11-12-2017	19-09-2024	प्रो. रमेश प्रसाद
11.	श्री सुदस्सन	4386/5987	23-12-2017	12-04-2024	प्रो. हर प्रसाद दीक्षित
12.	पञ्ञावंस	4363/5964	09-01-2016	24-07-2024	प्रो. रमेश प्रसाद

कार्यरत शोध छात्र

क्र.सं.	शोधार्थी	पंजीकरण	दिनांक	कार्यरत शोध छात्र	निर्देशक
1	नवांग थोकमे	4638/6239	29/04/2023	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
2	दीपंकर	4687/6288		कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
3	नन्दसार	4797/6398	29/11/2024	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
4	कोण्डञ्ञ	4796/6397	29/11/2024	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
5	जनक	4794/6395	29/11/2024	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
6	पण्डित	4795/6396	29/11/2024	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद
7	नीतेश वर्धन	4793/6394	29/11/2024	कार्यरत	प्रो. रमेश प्रसाद

विभागीय सुविधाएँ

- ❖ तीन कक्ष
- ❖ समृद्ध पुस्तकालय
- ❖ कम्प्यूटर, प्रिन्टर, फोटो स्टेट मशीन

विभागीय उत्तम गतिविधि (वेस्ट प्रैक्टिस)

- ❖ विपस्सना का ध्यान कराना।

विगत पाँच वर्षों में सरकारी नौकरी प्राप्त पुरातन छात्र

क्र.सं.	नाम	पद	संस्थान
1.	डॉ. आशीष गडपाल	शिक्षक	शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, जाम,कटंगी, बालाघाट (म.प्र.) ।
2.	डॉ. सोनल सिंह	Assistant Direct	महायोगी गुरु श्री, गोरक्षनाथ पीठ, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर ।
3.	डॉ. गणेश गिरि	सहायक विभागाध्यक्ष	सत् गुरुधाम संस्कृत महाविद्यालय, चाँदनी जालौन ।
4.	डॉ. विद्या धर तिवारी	शिक्षक	उच्च माध्यमिक विद्यालय वेलाव,प्रथम नवानगर, विहार ।
5.	डॉ. विशाखानन्द बन्सोड	ICCR	सम्पूर्णान्द संस्कृत विश्वविद्यालय ,वाराणसी ।
6.	डॉ. मुकेश मेहता	सहायक आचार्य	स्वामी विवेकान्द सुभारती, मेरठ(उ.प्र.) ।

विभाग के सबल पक्ष

- समृद्ध पुस्तकालय
- सम्पन्न एवं समृद्ध विद्या।
- सनातन परम्परा का वाहक।
- अधिकांश विदेशी छात्र अपने – अपने देशों के विहाराधिपति हैं।

विभाग की संभावनाएं

1. पालि को भारत सरकार द्वारा "शास्त्रीय भाषा" के रूप में मान्यता देने से विभाग को विशेष दर्जा प्राप्त होने की पूरी संभावनाएं हैं।
2. विभाग में छात्रों की वृद्धि की संभावनाएं।
3. विभाग से उपाधि प्राप्त छात्रों को नौकरी प्राप्त होनें की संभावनाएं।

विभाग की अपेक्षित कार्य

1 - विभागीय भवन-निर्माण की आवश्यकता।

2 - विभाग में आचार्य कक्ष, अध्यापन कक्ष की सम्यक व्यवस्था।

3 - विभाग का प्रचार - प्रसार।

4 - विभागीय कार्यालय।

5 - विभाग में अपेक्षाकृत कम छात्रों की संख्या में वृद्धि करना।

6 - विभाग को विशेष दर्जा प्राप्त करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से प्रयास करना।

धन्यवाद

।।भवतु सब्ब मंगलं।।

प्राकृत एवं जैनागम विभाग

श्रमण विद्या संकाय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विभागाध्यक्ष

प्रो0 रमेश प्रसाद

प्रस्तोता

प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय

विभाग का इतिहास

प्राकृत एवं जैनागम विभाग - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के श्रमणविद्या संकाय के अंतर्गत एक स्वतंत्र विभाग है। प्राकृत एवं जैनागम विभाग विश्वविद्यालय के स्थापना काल 1958 ई0 से अनवरत संचालित है। इसमें एक पद एसोसिएट प्रोफेसर (सहाचार्य) का स्वीकृत है। यह एकल विभाग (एकपदीय) है। सर्वप्रथम यह जैनदर्शन के साथ चलता था। स्वतंत्र होने के बाद प्रथम आचार्य डॉ0 गोकुलचन्द्र जैन (1978-1988 ई0) में थे।

अभी इसके आचार्य प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय हैं। जो 24 जनवरी 2005 को (सहाचार्य उपाचार्य) के रूप में नियुक्त होकर 25 जनवरी 2007 को आचार्य के रूप में प्रोन्नति हुए।

इस विभाग में प्राकृत के विभिन्न शास्त्रीय परम्पराओं का अध्ययन - अध्यापन किया जाता है। अर्धमागधी आगम साहित्य, शौरसेनी आगम साहित्य, प्राकृत महाकाव्य, खण्डकाव्य, सट्टक, सिद्धान्त साहित्य, कर्म साहित्य शिलालेखी साहित्य, अशोक एवं खारवेल आदि का अध्ययन - अध्यापन तथा शोध कार्य किया जाता है।

ध्येय

1. प्राकृत के विभिन्न शास्त्रों आगम, चरितकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य, सट्टक, शिलालेख साहित्य, सिद्धान्त साहित्य, दार्शनिक साहित्य आदि का अध्ययन अध्यापन तथा शोध कार्य।
2. प्राकृत एवं आगम दोनों एकही हैं। प्राकृत भाषा है और आगम प्राकृत भाषा में निबद्ध ग्रंथ। प्राकृत के विद्वानों को तैयार करना।
3. जनमानस तक प्राकृत की महनीयता को प्रतिष्ठापित करना।
4. प्राकृत के छात्रों को अधिकाधिक वृत्त - जीवन भरण संसाधन उपलब्ध कराने में सहायता करना।
5. प्राकृत को अधिकाधिक सरकारी महत्त्व दिलाना। राजधर्म में प्रतिष्ठापित करना।
6. शोधकार्य, प्रकाशनादि करना।
7. विभिन्न राष्ट्रिय अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठियों का आयोजन करना।
8. जे0आर0एफ0/नेट तथा अन्य प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए छात्रों को योग्य बनाना।

दृष्टि

- प्राकृत को समृद्ध करना।
- प्राकृत को जनमानस तक पहुँचाना।
- प्राकृत को सर्वजन हृदयहार बनाना।
- प्राकृत को अधिक से अधिक आकर्षक बनाना।
- प्राकृत के विद्वान् तैयार करना।

विभागीय पाठ्यक्रम (Programmes)

- शास्त्री
- आचार्य
- विद्यावारिधि
- वाचस्पति

समितियों का विवरण

1. विभागीय समिति
2. अध्ययन बोर्ड
3. अनुसंधानोपाधि समिति

शैक्षणिक कार्यक्रम की सूची (समकक्षता विवरण के साथ)

1- शास्त्री (स्नातक) तथा आचार्य (स्नातकोत्तर)

पाठ्यक्रम समिति एवं अन्य समितियों का विवरण

1- विभागीय पाठ्यक्रम - अध्ययन बोर्ड

2- संकाय बोर्ड - संकायाध्ययन बोर्ड

3- अनुसंधानोपाधि समिति (RDC)

शिक्षण विधि विवरण

- सर्वप्रथम छात्र में उत्साह और रुचि संवर्द्धन करना।
- पाठ्यक्रम के विषय में सहजता सरलता एवं सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाना।
- मूलग्रंथ का पाठ, अन्वय, शब्दार्थ, अर्थ- विमर्शन साहित्यिक दार्शनिक विमर्शन सहित।
- पूर्व में अध्यापित विषयों का स्मरण।
- गृह - कार्य (विषय से सम्बद्ध) ।
- अन्य सम्बद्ध उन्नत कार्य - भाषण निबन्ध लेखन की तैयारी सेमिनार आदि का आयोजन।

विगत पाँच वर्षों का विवरण

क्र.सं.	सत्र	शास्त्री प्रथम वर्ष/ I,II सेमे.		शास्त्री द्वितीय वर्ष/ III, IV सेमे.		शास्त्री तृतीय वर्ष/ V,VI सेमे.		आ .I, II सेमे.		आ. III, IV सेमे.		कुल छात्रों की संख्या
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	2019-20	06	00	00	01	00	02	04	00	04	00	17
2	2020-21	02	01	01	00	00	01	00	04	06	00	15
3	2021-22	09	08	00	01	01	00	01	05	00	02	27
4	2022-23	09	01	03	01	00	01	08	01	02	01	27
5	2023-24	01	00	04	02	00	00	04	00	00	00	11

स्वीकृत एवं रिक्त पद

एक एशोसिएट प्रोफेसर (प्रोन्नत होकर प्रोफेसर) एक सरकार से स्वीकृत एक स्थायी पद - 01

कार्यरत अध्यापकों का विवरण क्रमशः (शैक्षणिक योग्यता सहित)

अध्यापक नाम	योग्यता	धारित पद	विशिष्टता का क्षेत्र	अध्यापन अनुभव	निर्देशित शोध छात्र
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	एम0 ए0 संस्कृत और प्राकृत (द्वय विषय) लब्धस्वर्णपदक पी.एच.डी., डी. लिट्	प्रोफेसर- प्राकृत एवं जैनागम विभागाध्यक्ष/संकायाध्यक्ष/छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष (DSW)	काव्य, शास्त्र, प्राकृत, साहित्य, नाटक	38	31

विगत पाँच वर्षों में विभागीय ग्रन्थ प्रकाशन

आठ ग्रन्थ – प्रो. हरिशंकर पाण्डेय के प्रकाशित 2022 - 2024

सम्पादक	पुस्तक/पत्रिका	सत्र	ISSN/ISBN	प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	भारतीय ज्ञान परम्परा विमर्श	2023	978-81-940936-8-8	भारती प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	आगमों का अलंकार शास्त्रीय अध्ययन	2024	978-93-95276-15-3	प्राच्यविद्या भवन प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	कुलगीतम् शैलीवैज्ञानिकमध्ययनम्	2022	81-7270-299-x	सं.सं.वि.वि., वाराणसी
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	जैन अर्द्धमागधी आगमों का काव्यशास्त्रीय परिशीलन	2024	978-93-94343-85-6	सं.सं.वि.वि., वाराणसी
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	श्वेताम्बर आगमों का रसशास्त्रीय विवेचन	2024	978-93-95276-15-3	प्राच्यविद्या भवन प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	भारतीय विरासत एक अनुशीलन	2024	978-93-94814-19-6	भारत – भारतीय प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	सनातन विमर्श	2024	978-93-95276-16-0	प्राच्यविद्या भवन प्रकाशन
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	भारतीय चिन्तन का उत्कर्ष	2024	978-81-972972-6-9	भारती प्रकाशन

विगत पाँच वर्षों में अध्यापकवार शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण

अध्यापक	शोध लेख	सेमिनार राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय/ कार्यशाला	सत्र
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	16	04 / 02	2018 से 2024 तक

विभागीय कार्यक्रम

- छात्र समस्या समाधान एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रकाश।
- साप्ताहिक विचार गोष्ठी।
- विभिन्न जयन्तियों का आयोजन।
- विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्ताराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन।

छात्रवृत्ति एवं पुरस्कार विवरण

1.दीपक वत्स शास्त्री द्वितीय वर्ष 2023 ने अमृत महोत्सव पर भारत सरकार द्वारा आयोजित लोक-गीत लेखन राष्ट्रीय पुरस्कार (यूनिटी एंड क्रिएटिविटी) रूपये 04 लाख नगद प्राप्त।

देशभक्ति गीत का शीर्षक -"भारत दुनिया का शान छै" मैथिली गीत श्री अर्जुन राम मेघवाल भारतीय संस्कृति कानून एवं न्याय राज्य मंत्री एवं श्रीमती मीनाक्षी लेखी संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री भारत सरकार द्वारा 4 लाख रुपए की प्राप्ति।

2.श्री जितेंद्र कुमार सत्र - 2023 में यूजीसी द्वारा आयोजित जे.आर.एफ. नेट परीक्षा उत्तीर्ण किया, ओबीसी कैटेगरी में सर्वाधिक अंक प्राप्त।

पुरस्कार

क्र.सं.	छात्र नाम	विभाग नाम	सत्र	संस्थान	पदक/गोल्ड मेडल नाम
1.	जितेन्द्र कुमार	प्राकृत एवं जैनागम	2019-2020	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल
2.	पंकज कुमार जैन	प्राकृत एवं जैनागम	2020-2021	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल
3.	कु. अर्चना उपाध्याय	प्राकृत एवं जैनागम	2021-2022	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल
4.	नागेन्द्र द्विवेदी	प्राकृत एवं जैनागम	2023-2024	सं.सं.वि.वि., वाराणसी	गोल्ड मेडल

शोध छात्रों की स्थिति (विगत पाँच वर्षों की)

क्र.सं.	शोधार्थी	पंजीकरण संख्या	दिनांक	उपाधि प्राप्त	निर्देशक
1.	सुरेन्द्र कुमार	4406/6170	14-12-2017	16-11-2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
2.	श्रवण कुमार	4405/6006	15-12-2017	16-11-2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
3.	वन्दना	4401/6002	11-12-2017	20-11-2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
4.	रिंकी सिंह	4404/6005	14-12-2017	20-01-2024	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
5.	श्रीशरंजन त्रिपाठी	4402/6003	11-12-2017	23-04-2024	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
6.	अभिषेक व्दिवेदी	4403/6004	11-12-2017	23-04-2024	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
7.	अभिषेक पाण्डेय	4406/6007	15-12-2017	23-04-2024	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
8.	सूर्यभान कुमार	4407/6008	18-12-2017	07-09-2024	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय

कार्यरत शोध छात्र

क्र.सं.	शोधार्थी	पंजीकरण संख्या	दिनांक	निर्देशक
1	जितेन्द्र कुमार	4703/6304	08/05/2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
2	दुर्गा आचार्य	-	-	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
3	मुन्ना दुबे	4791/6352	21/11/2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
4.	योगेश कुमार तिवारी	4743/6344	11/09/2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
5	विष्णु चौबै	4742/6343	24/05/2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय
6	वेद प्रकाश त्रिपाठी	4630/6231	29/04/2023	प्रोफेसर हरिशंकर पाण्डेय

विभागीय सुविधाएँ (कक्षा, पुस्तकालय, आईसीटी इत्यादि)

1. एक कक्ष विभाग में ।

2. पुस्तकों की प्रभूत व्यवस्था ।

3. कम्प्यूटर, प्रिंटर, जेरॉक्स की व्यवस्था ।

विगत 5 वर्षों में सेवा प्राप्त छात्र

क्र.सं.	नाम	पद	संस्थान	सत्र
1.	डॉ. अमित कुमार	सहायक आचार्य	वीर कुंवरसिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार	2022
2.	श्री मनीष जैन	प्रवक्ता	लोक सेवा आयोग विहार	2024
3.	डॉ. पंकज जैन	सहायक अध्यापक	उच्च माध्यमिक विद्यालय इंदौर	2021
4.	डॉ. अरिहन्त जैन	सहायक आचार्य	विश्वविद्यालय मुंबई नियुक्ति	2023
5.	डॉ. श्रवण कुमार	अ. अध्यापक	सं.सं.वि.वि.,वाराणसी	2023
6.	डॉ. सूर्यभान कुमार	अ. अध्यापक	सं.सं.वि.वि.,वाराणसी	2024

विभागीय उत्तम गतिविध (बेस्ट प्रैक्टिस)

1- जे०आर०एफ०, नेट में छात्रों का चयन ।

2 - अनेक सेमिनारों का आयोजन ।

3 - राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त ।

विश्वविद्यालय में विभाग की भूमिका एवं योगदान

1. विश्वविद्यालय के विकास, उन्नयन – प्रतिष्ठा - सम्बर्द्धन तथा महनीयता - संस्थापन में विभाग के आचार्य एवं अन्य लोग (विभागीय परिवार) श्रद्धा समृद्ध भाव के कार्य ।
2. विश्वविद्यालय में अपने विभागीय शोधकार्यों – शोधप्रकाशन, शोधनिर्देशन में उच्च गुणीय – प्रतिष्ठापन ।
3. विश्वविद्यालय के लिए आवश्यक सभी कार्यों को संपन्न करना ।
4. मिले दायित्व को समय पर पूरा करना ।

विभाग के मजबूत पक्ष

1. सम्पन्न, समृद्ध एवं उदात्तोन्नत विद्या - विरासत।

2. प्राचीन भारतीय- संस्कृति के प्राण तत्वों- संस्कृत- प्राकृत -पालि भाषा (प्राच्यवाङ्मय) में से एक।

3. सबके लिए उपयोगी, सबके विकास, संरक्षण के साथ राष्ट्र संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण अवस्थापन।

5. उच्च शोध कार्य को सम्पन्न कराना।

6. ग्रंथ प्रकाशन शोध/लेख प्रकाशन कराना।

विभाग की संभावनाएं

1. विकास की संभावना के रूप में प्राकृत को भारत सरकार "शास्त्रीय भाषा" के रूप में महत्त्व देने से विकास की पूरी संभावनाएं हैं।

2. विभिन्न स्थानों पर - विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, माध्यमिक - शिक्षा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की संभावनाएं।

3- प्राकृत विभाग का कक्ष - आसन एक सिद्ध पीठ है। इसमें मनोयोग से जो कार्य करता है, वह पूर्ण हो जाता है।

विभाग की भावी योजनाएं

1. प्राकृत के विभिन्न शास्त्रों आगम, चरितकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य, सट्टक, शिलालेख साहित्य, सिद्धान्त साहित्य, दार्शनिक साहित्य आदि का अध्ययन अध्यापन तथा शोध कार्य।
2. प्राकृत एवं आगम दोनों एकही है। प्राकृत भाषा है और आगम प्राकृत भाषा में निबन्ध ग्रंथ। प्राकृत के विद्वानों को तैयार करना।
3. जनमानस तक प्राकृत की महनीयता को प्रतिष्ठापित करना।
4. प्राकृत के छात्रों को अधिकाधिक वृत्त - जीवन भरण संसाधन उपलब्ध कराने में सहायता करना।
5. प्राकृत को अधिकाधिक सरकारी महत्त्व दिलाना। राजधर्म में प्रतिष्ठापित करना।
6. शोधकार्य, प्रकाशनादि करना।
7. विभिन्न राष्ट्रिय अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठियो का आयोजन करना।
8. जे0आर0एफ0/नेट तथा अन्य प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए छात्रों को योग्य बनाना।

भविष्यत्कालीन योजनाएं

1. प्राकृत एवं जैनागम विभाग में एक आचार्य, दो उपाचार्य तथा तीन सहायक आचार्य के पद को स्थापित कराने का सरकार से, विश्वविद्यालय प्रशासन के माध्यम से प्रयास साधना।

2 . प्राकृतभवन . स्वतंत्र विभागीय भवन के लिए प्रयास करना।

3. प्राकृत के छात्रों को अधिक से अधिक वृत्त में नियोजित कराने के लिए योग्य बनाना।

4. प्राकृत के पाण्डुलिपियों का सम्पादन प्रकाशन।

विभाग की अपेक्षित कार्य एवं संभावनाएँ

1. विभागीय भवन - निर्माण की आवश्यकता।
2. विभाग में आचार्य कक्ष, अध्यापन कक्ष की सम्यक व्यवस्था।
3. विभाग का प्रचार - प्रसार।

चुनौतियाँ

1. विभाग में अपेक्षाकृत छात्रों की संख्या कम होना।
2. यहां पर दूर - दराज के छात्र पढ़ने आते हैं। वहां पर प्राकृत का प्रचार - प्रसार नहीं है। यहां इस विश्वविद्यालय में साहित्य – व्याकरण - वेद - ज्योतिष आदि विषयों का ध्यान करने छात्र आते हैं।
3. इन कमजोरियों को दूर करने के लिए विभाग अनीश संकट है। अपनी उपलब्धियों का छात्रों के बीच संस्थापन कर छात्राकर्षण का कार्य विभाग करता है।

धन्यवाद

संस्कृतविद्या विभागः

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी

ध्येयाः

- वैदिकग्रन्थानाम्, उपनिषदाम्, दर्शनानाम्, व्याकरणस्य, संस्कृतसाहित्यस्य च अध्यापनम्,अनुसन्धानञ्च ।
- वैदेशिकच्छात्राणां सीमान्तप्रदेशीयच्छात्राणाञ्च कृते प्रमाणपत्रीयपाठ्यक्रमानुगतसंस्कृतभाषाप्रशिक्षणम्, वेदसाहित्यव्याकरणदर्शनेष्वध्यापनार्थञ्च विशेषोपक्रमः
- आङ्ग्लहिन्दीसंस्कृतभाषाज्ञातानां वैदेशिकानां कृते साङ्केतिकसोपानेन वर्णपदपरिज्ञानात्मकमध्यापनं विभागस्य विशेषध्येयम् ।

दृष्टय:

- विदेशेष्वपि शिक्षणसंस्थानेषु भारतीयज्ञानपरम्परायाः शिक्षकरूपेणाध्यापनार्थम् , धार्मिकसंस्थानेषु प्रावाचकरूपेण प्रवचनार्थम्, पर्यटनकार्येषु पारम्परिकैतिह्यं परिज्ञानार्थञ्च दक्षच्छात्रनिर्माणम् |
- आर्थिकदृष्ट्यापि छात्रा आत्मावलम्बिनो भवेयुः|
- संस्कृतभाषानुवादप्रवचनादिषु कौशलपूर्णशिक्षणप्रदानम् |
- वैश्विकशिक्षणसंस्थानेषु भारतीयज्ञानपरम्पराप्रतिष्ठापनम्

ऐतिह्यम्

- स्थापनावर्षम्- 1974(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः)
- स्थापनाकालादेव भारतीयविद्यासंस्कृतिः एवं संस्कृतप्रमाणपत्रीयसंकायस्य १९९४ पर्यन्तमनुभागरूपेण आसीत्
- १९९४तः संस्कृतविद्याविभाग इति नाम्ना स्वतन्त्रविभागः|
- श्रमणविद्यासङ्कायस्यानुभागरूपेण "भारतीयविद्यासंस्कृति एवं संस्कृतप्रमाणपत्रीय विभागः" आसीत् | श्रमणधारायां पालि-प्राकृत-बौद्धदर्शनादीनामध्येतॄणां कृते संस्कृतभाषायां शास्त्रे प्रवेशार्थमस्यानुभागस्य प्रतिष्ठापना विश्वविद्यालयद्वारा कृता आसीत् | निश्चप्रचं वैदेशिकाः सीमान्तप्रदेशीयाश्च प्रस्तुतानुभागतः संस्कृतभाषा-शास्त्रपरिचिताः भूत्वा पालिप्राकृतबौद्धथेरवादादिदर्शनेषु प्रवेशं संगृहीतवन्तः |

स्वीकृतविषयाः

- व्याकरणम्
- साहित्यम्
- दर्शनम्

शैक्षणिकपाठ्यक्रमा:

- शास्त्री/ बी.ए (स्नातक:) – त्रिवर्षीय:
- आचार्य:/ एम.ए (स्नातकोत्तरम्) – द्विवर्षीय:
- विद्यावारिधि:/ पीएच्.डी (शोधोपाधि:) – त्रिवर्षीय:
- संस्कृतप्रमाणपत्रीय: (इण्टरमीडिएट) – त्रिवर्षीय:

विभागीयसमितयः

- अध्ययनसमितिः
- सङ्कायसमितिः
- शोधसमितिः

विभागीयसौविध्यानि

- सभागार: – ०१
- अध्यापनप्रकोष्ठा: – ०४
- आधुनिकयन्त्रम् – ०१
- प्रोजेक्टरयन्त्रम् – ०१
- विभागीयकार्यालयकक्ष: – ०१

विभागीयोपक्रमाः

- शास्त्रार्थसभा
- संस्कृतशिविरसंचालनम्

शिक्षणविधयः

पारम्परिकविधिः (गुरुकुलपद्धतिः)

व्याख्यानविधिः

चर्चाविधिः

समस्यासमाधानविधिः

सहयोगिशिक्षणविधिः

ऑनलाइनपद्धतिः

प्रश्नोत्तरविधिः

सङ्गणकप्रदर्शनडिजिटलविधिः

विशिष्टव्याख्यानविधिः

पञ्जिकृतच्छात्राणां विवरणम् (विगतपञ्चवर्षेषु २०१८-२०२४)

वर्ष	शास्त्री प्रथम			शास्त्री द्वितीय			शास्त्री तृतीय			आचार्य प्रथम/ द्वितीय,			आचार्य तृतीय / चतुर्थ		
	स्त्री	पु.	कुल	स्त्री	पु.	कुल	स्त्री	पु.	कुल	स्त्री	पु.	कुल	स्त्री	पु.	कुल
२०१८-१९	२	३६	३८	५	३१	३६	२	१८	२०	२	१८	२०	७	११	१८
२०१९-२०	१	३२	३३	२	२०	२२	३	२९	३२	१	१५	१६	३	९	१२
२०२०-२१	०१	२१	२२	१	३१	३२	२	१९	२१	१	१९	२०	२	११	१३
२०२१-२२	२	४०	४२	१	२०	२१	१	२७	२८	४	२३	२७	१	१६	१७
२०२२-२३	०१	३३	३४	१	२९	३०	१	२०	२१	१	१८	१९	३	२३	२६
२०२३-२४	१	२६	२७	०१	३३	३४	१	२७	२८	४	१७	२१	३	१६	१९

संस्कृतप्रमाणपत्रीयम्

वर्ष	प्रथम खण्ड	द्वितीय खण्ड	तृतीय खण्ड
२०१८-१९	(३) २. पु. १. स्त्री	३ पु.	१ पु.
२०१९-२०	१ पु.	(३) १. स्त्री २. पु.	२ पु.
२०२०-२१	(५) २. स्त्री ३. पु.	०	(३) २.पु. १. स्त्री
२०२१-२२	३. पु.	१पु.	०
२०२२-२३	१ पु.	१पु.	०
२०२३-२४	१पु.	१पु.	१पु.

पदविवरणम्

क्र.	पदनामानि	पदानि	पूरितपदानि	रिक्तपदानि
१.	सहायकाचार्यः	०४	०१	०३

अध्यापकानां विवरणम्

क्र.	अध्यापकनामानि	पदानि
१.	डॉ. रविशंकर पाण्डेयः	सहायकाचार्यः
२.	डॉ. देवात्मा दुबे	अतिथि-प्राध्यापकः
३.	डॉ. शिल्पी गुप्ता	अतिथि- प्राध्यापिका

विभागीयाध्यापकानां विवरणम्

क्र.	नामानि	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापनानुभव:	सङ्गोष्ठ्य:	प्रकाशनानि
१.	डॉ. रविशंकर पाण्डेय:	पीएच्. डी , नेट जे.आर.एफ्	१६ वर्षाणि	२५ राष्ट्रीया: १५ अन्ताराष्ट्रीयाश्च	२५ शोधलेखा:
२.	डॉ. देवात्मा दुबे	पीएच्. डी , नेट	१० वर्षाणि	५ राष्ट्रीया: ४ अन्ताराष्ट्रीयाश्च	१५ शोधलेखा:
३.	डॉ. शिल्पी गुप्ता	पीएच्. डी , नेट	७ वर्षाणि	२५ राष्ट्रीया: ६ अन्ताराष्ट्रीयाश्च	७ शोधलेखा:

१.
डॉ. रविशंकर पाण्डेयः

डॉ. रविशंकर पाण्डेयः

- सहायकाचार्यः (संस्कृतविद्या विभागः) (व्याकरणसंवर्गः)
- अध्यापनानुभवः– १६ वर्षाणि
- शैक्षणिक योग्यताः – पीएच्. डी , नेट, जे.आर.एफ्
- आचार्यः- व्याकरणम्, बौद्दर्शनम्
- प्रकाशनम् – २५ शोधलेखाः
- सङ्गोष्ठ्यः- २५ राष्ट्रीयाः, १५ अन्ताराष्ट्रीयाश्च
- पुरस्काराः – ०६ पुरस्काराः
- आकाशवाणी संवादः- ०१
- शोधनिर्देशनम्- उपाधिप्राप्ताः ०३, शोधरताः ४

डॉ. देवात्मा दुबे

- अतिथि-प्राध्यापकः(संस्कृतविद्या विभागः) (साहित्यसंवर्गः)
- अध्यापनानुभवः– १० वर्षाणि
- शैक्षणिक योग्यताः - पीएच्. डी , नेट
- आचार्यः- साहित्यम्, दर्शनम्, योगतन्त्रम्, पुराणेऽतिहासश्च
- प्रकाशनम् - १५ शोधलेखाः
- सङ्गोष्ठ्यः- ५ राष्ट्रीयाः ४ अन्ताराष्ट्रीयाश्च
- आयोजनम्- अन्ताराष्ट्रीय संस्कृतसम्भाषणशिविरम् (सं.सं.वि.वि)

डॉ. शिल्पी गुप्ता

- अतिथि-प्राध्यापिका(संस्कृतविद्या विभागः) (दर्शनसंवर्गः)
- अध्यापनानुभवः– ७ वर्षाणि
- शैक्षणिक योग्यताः - पीएच्. डी , नेट
- आचार्यः- जैनदर्शनम्,दर्शनम्
- प्रकाशनम् - ७ शोधलेखाः
- सङ्गोष्ठ्यः- २५राष्ट्रीयाः ६ अन्ताराष्ट्रीयाश्च

विगतपञ्चवर्षेषु विभागीयप्रकाशनम्

क्र.	अध्यापकनामानि	शोधपत्रसङ्ख्या:	ग्रन्था:/ पत्रिका:
१.	डॉ. रविशंकर पाण्डेय:	२५	
२.	डॉ. देवात्मा दुबे	१२	१ पुस्तकम्
३.	डॉ. शिल्पी गुप्ता	१५	

विगतपञ्चवर्षेषु विभागीयकार्यक्रमा:

क्र.	कार्यक्रमविवरणम्	शीर्षक:	दिनाङ्क:
१.	विशिष्टव्याख्यानम्	वृत्तिविमर्श: राष्ट्रीयसंगोष्ठी	-
२.	संस्कृतसम्भाषणशिविरम्	१०४ विदेशिजनेभ्य: संस्कृताङ्लभाषाभ्यां सं. संभाषणशिविरम्	३मार्चत: – २७मार्चपर्यन्तम्
३.	अन्ताराष्ट्रीयसेमीनार	विश्वविद्यालयस्थापनादिवसे अन्ताराष्ट्रीयसेमिनारकार्यक्रम: (भारतीयज्ञानपरम्परा एवं विश्वगुरुभारत)	१०-०४-२०२४

“ भारतीय ज्ञान परम्परा और विश्वगुरु भारत "

विभागीय संस्कृतसम्भाषणशिविरम्

संख्या/No. 2-1/2024(प.मू.श.)- संस्कृत

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
शिक्षा मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
GOVERNMENT OF INDIA
COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
Ministry of Education
Department of Higher Education

011-20867172
वेबसाइट/Website : www.cstt.education.gov.in

पश्चिमी खंड VII, रामकृष्ण पुरम, सेक्टर-1
West Block VII, R. K. Puram, Sector-1
नई दिल्ली /New Delhi-110066
दिनांक: 08.04.2025

सेवा में,

प्रो. रवि शंकर पाण्डेय,
संस्कृत विभाग, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी (उ.प्र.)

विषय:- पर्यावरण विज्ञान मूलभूत शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी-संस्कृत) की बैठक में भाग लेने के संदर्भ में।

महोदय,

आपको विदित ही है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय का अधीनस्थ कार्यालय है तथा अपनी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत विभिन्न शैक्षिक विषयों में हिंदी में तथा क्षेत्रीय भाषाओं में शब्द-संग्रह / शब्दावली, परिभाषा कोश, त्रैमासिक पत्रिका -विज्ञान गरिमा सिंधु एवं ज्ञान गरिमा सिंधु आदि का निर्माण/प्रकाशन करता है ।

'क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावलियों/शब्द-कोश निर्माण' योजना के अंतर्गत **पर्यावरण विज्ञान मूलभूत शब्दावली** को संस्कृत में तैयार करने के लिए आगामी बैठक का आयोजन दिनांक 21-25 अप्रैल 2025 तक आयोग के समिति-कक्ष, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस बैठक में आप विशेषज्ञ के रूप में सादर आमंत्रित हैं।

बैठक में भाग लेने हेतु मानदेय तथा यात्रा-भत्ता नियमानुसार दिया जाएगा। यात्रा-भत्ता अधिकतम 2 टियर ए.सी. रेल किराया (टिकट की फोटो प्रति देने पर)/ हवाई जहाज का किराया (इकोनॉमी क्लास) दिया जाएगा। हवाई जहाज के टिकट की बुकिंग **भारत सरकार द्वारा अनुमत ट्रेवल्स एजेंसी- (i) M/s Balmer Lawie & Company Limited (BLCL) (ii) M/s Ashok Travels & Tours (ATT) (iii) Indian Railways Catering and Tourism Corporation Limited (IRCTC)** से ही की जाए तथा स्थानीय वाहन भत्ता व दैनिक भत्ता कैंद्रीय सरकार के नियमानुसार (अधिकतम ग्रेड पे रु. 5400/-के समकक्ष) प्रतिपूर्ति (Reimbursement) किया जाएगा। TA/DA व मानदेय आदि का भुगतान नियमानुसार ECS/PFMS के द्वारा कार्यालय से कार्योत्तर (post facto) किया जाएगा। इसके लिए निरस्त चेक (Cancelled Cheque) संलग्न करना अनिवार्य है। बैठक का समय प्रात: 10:30 से सांय 5.00 बजे तक रहेगा।

आशा है कि राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य में आपका सहयोग अवश्य मिलेगा ।

सधन्यवाद,

भवदीय,
(डॉ. धर्मेन्द्र कुमार)
उपनिदेशक (विषय)

भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयेन पर्यावरणविज्ञानमूलपदार्थ (अङ्ग्रेजी-हिन्दी-संस्कृत) विषये सभायां सहभागितायाः सन्दर्भे|

१०४ विदेशिजनेभ्यः संस्कृताङ्लभाषाभ्यां सं. संभाषणशिविरम्

सरोकार संपूर्णानंद संस्कृत विवि में जुटे विभिन्न देशों के छात्र, प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए ले रहीं शिक्षा

विदेशी व मुस्लिम महिलाएं भी सीख रहीं संस्कृत

अजय कृष्ण श्रीवास्तव • वाराणसी

देश में जहां संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में गिरावट आई है, वहीं विदेशियों में प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को जानने की जिज्ञासा बढ़ रही है। इसका साक्षी है संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय। वर्तमान में यहां रूस, ब्रिटेन, म्यांमार, नेपाल सहित विभिन्न देशों के छात्र भारतीय संस्कृति व संस्कृत को पढ़ने व समझने में जुटे हुए हैं। विश्वविद्यालय में विदेशी ही नहीं मुस्लिम महिलाएं भी संस्कृत सीख रही हैं।

रूस की प्रो. ओल्गा फापेल्को को भारतीय दर्शन ने इस कदर प्रभावित किया कि वह संस्कृत पढ़ने के लिए अपना देश छोड़कर भारत आ गईं। रशियन प्रेसिडेंसियल एकेडमी ऑफ नेशन, मास्को की असिस्टेंट प्रोफेसर रह चुकी प्रो. ओल्गा वर्तमान में विश्वविद्यालय से तीन वर्षीय संस्कृत पाठ्यक्रम में डिप्लोमा कर रही हैं। वह 2003 में पहली बार भारत घुमने आई थीं। विभिन्न व्याख्यानों में भारत कई बार आना-जाना हुआ।

वाराणसी : संपूर्णानंद संस्कृति विश्वविद्यालय में विदेशी व अन्य छात्रों को पढ़ाते असिस्टेंट प्रोफेसर रविशंकर पाडेय • जागरण

मुस्लिम भी पीछे नहीं ... मऊ की जेबा आफरीन। वह संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री कर रही है। उन्होंने आठवीं तक की शिक्षा मदरसा से हासिल की है। शास्त्री कर रही जेबा के परिवार वालों का संस्कृत से दूर-दूर तक नाता नहीं है। इसके बावजूद जेबा संस्कृत सीखने व समझने में जुटी है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

प्रतिस्पर्धा में भारतीय और विदेशी छात्रों ने दिखाया कौशल

सरदार वल्लभभाई पटेल की 148वीं जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या विभाग में एक प्रतिस्पर्धा आयोजित की गई। इस प्रतिस्पर्धा में भारतीय और विदेशी विद्यार्थियों ने प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विभागीय छात्र अंजिका तिवारी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रेरणात्मक जीवनी को काव्यरूप में सुनाया, जिसे श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संकाय अध्यक्ष प्रोफेसर हरिशंकर पांडे ने सभी छात्रों को सरदार पटेल के जीवन और उनके योगदान के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि पारंपरिक विषयों को जोड़ते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल के क्रांतिकारी जीवन को छात्रों के बीच में रखा, जो प्रेरणादायक और उत्साहवर्धक रहा। पाली विभाग के प्रोफेसर रमेश प्रसाद ने विभिन्न आंदोलनों से जुड़े हुए सरदार वल्लभभाई पटेल के उन अनछुए पहलुओं को भी उजागर किया, जिससे छात्रों को नवीन ज्ञान की प्राप्ति हुई।

समाचारपत्रिकायाम्

भारतीय संस्कृति की ज्योति जलाने में जुटीं यूक्रेन की अन्तोल्लेना

अन्तोल्लेना • जागरण

- संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत प्रमाणपत्रीय, शास्त्र करने के बाद अब आचार्य बनने की ललक
- पीएचडी करने के बाद काशी की धरती से पूरी दुनिया में संस्कृति के प्रचार-प्रसार का संकल्प

पाणिनि व्याकरण के रहस्य को जानने के लिए विदेशी भी लालायित हैं। संस्कृत प्रमाण पत्रीय से लेकर आचार्य पर्यंत संस्कृत विद्या विभाग में दर्शन और व्याकरण का अध्ययन करने वाली यूक्रेन की अन्तोल्लेना अब भारतीय संस्कृति में पूरी तरह रस बस गई हैं। पाणिनि के सूत्रों की धारा प्रवाह व्याख्या कर रही हैं। यही नहीं हिंदी भी समझ ले रहीं हैं लेकिन पढ़ाई संस्कृत व अंग्रेजी में ही कर रही हैं।

-प्रो. रवि शंकर पांडेय, प्रभारी संस्कृत विद्या विभाग।

जागरण संवाददाता, वाराणसी : भारतीय संस्कृति और संस्कृत की महिमा दुनियाभर में फैल रही है। वहीं प्राच्य विद्या के लिए काशी प्रेरणास्रोत बनी हुई है। विज्ञान प्रौद्योगिकी के दौर में आज भी देश-विदेश से तमाम जिज्ञासु विद्यार्थी प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को समझने काशी आते रहते हैं। इसी कड़ी में यूक्रेन की मूल निवासी अन्तोल्लेना काशी में रहकर भारतीय संस्कृति की ज्योति जलाने में जुटी हुई हैं। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य (स्नातकोत्तर) कर रहीं अन्तोल्लेना का एक मात्र लक्ष्य संस्कृत व संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है। कुछ इसी सोच के बाद यूक्रेन से पैरामेडिकल की पढ़ाई करने के बाद संस्कृत पढ़ने वह काशी आ गईं। जैसे-जैसे समय बीत रहा है वह भारतीय संस्कृति व संस्कृत में रच-बस रहीं हैं।

अन्तोल्लेना ने बताया कि भारत पहली बार वर्ष 2016 में आई थीं। उज्जैन महाकुंभ में साधु-संतों के त्याग व तपस्या ने कुछ इस कदर प्रभावित किया कि भारतीय संस्कृति की ओर वह खिंची चली आईं। कुंभ में पूरे श्रद्धा के साथ पूजा-पाठ देख भारतीय संस्कृति को समझने का प्रयास किया। इस दौरान एक संत की सलाह पर प्राच्य विद्या को समझने के लिए काशी आ गईं। इस बीच नेपाल भी जाना हुआ। नेपाल में गोरखनाथ सम्प्रदाय का दीक्षा लेकर पुनः काशी आ गईं। यहां केदारघाट आश्रम के गुरुजी के माध्यम से वर्ष 2018 में संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रमाणपत्रीय में दाखिला ले लिया। तीन वर्ष का ब्रिज कोर्स करने के बाद वर्ष 2024 में शास्त्री (स्नातक) किया। इस क्रम में अब आचार्य कर रहीं हैं। आचार्य के बाद अन्तोल्लेना की इच्छा विश्वविद्यालय से ही पीएचडी करने की है। उन्होंने बताया कि अब भारतीय प्राच्य विद्या और संस्कृति को अपना जीवन समर्पित कर दी हूं। कहा कि संस्कृत न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की आत्मा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में छिपा ज्ञान आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है। वह संस्कृत और भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रचार-प्रसार करना चाहती हैं। काशी में उन्होंने भारतीय परंपराओं, योग और वेदांत दर्शन का गहराई से अध्ययन कर रही हैं।

बच्चों ने कला क्राफ्ट व

28 Dec 2024, 6:53 am

क्रमशः. . .

संस्कृत व संस्कृति पर विदेशी भी फिदा

जागरण संवाददाता, वाराणसी : भारतीय संस्कृति व संस्कृत पर विदेशी भी फिदा है। प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिए प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विदेशी काशी आते रहते हैं। कई विदेशी विद्यार्थी संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में बकायदा अध्ययन भी कर रहे हैं। वर्तमान में शास्त्री-आचार्य सहित पाठ्यक्रमों 73 विदेशी छात्र पंजीकृत है। खास यह कि इन छात्रों का मकसद संस्कृत पढ़कर रोजगार हासिल करना नहीं वरन अपने देश में संस्कृत के प्रचार-प्रसार है।

थाईलैंड के प्रमाहा प्रदीव्रोचना व कनाडा के दिनेश्वर धनराज का कहना है कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। इसे सभी भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। दूसरी ओर कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त संस्कृत को ही माना गया है। नासा भी यह बात स्वीकार कर चुका है। इसे समझने की दृष्टि से विश्वविद्यालय में दाखिला लिया है। युक्रेन की याना चेरमिया ने इस वर्ष संस्कृत प्रमाणपत्रीय में पंजीकरण कराया है। उन्होंने बताया कि शुरू में संस्कृत समझने में थोड़ी परेशानी हुई लेकिन अब समझ में आ रहा है। संस्कृत काफी सरल व उपयोगी भाषा है।

संस्कृत विश्वविद्यालय में विदेशी छात्रों की संख्या कक्षावार

- 04 शास्त्री (प्रथम खंड)
- 04 शास्त्री (द्वितीय खंड)
- 03 शास्त्री (तृतीय खंड)
- 24 आचार्य (प्रथम खंड)
- 16 आचार्य (द्वितीय खंड)
- 08 संस्कृत प्रमाणपत्रीय
- 11 पीएचडी

देश में बढ़ा अंग्रेजी का वर्चस्व

देश में अंग्रेजी का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। इसे देखते हुए परिषदीय विद्यालयों को भी अब अंग्रेजी माध्यम में बदला जा रहा है। वहीं संस्कृत विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या लगातार घटती जा रही है। वर्तमान सत्र में विश्वविद्यालय व इससे संबद्ध कालेजों में छात्रों की संख्या महज 53000 रह गई है। वर्ष 2002 से पहले करीब दो लाख छात्र पंजीकृत थे। हालांकि विदेशियों की संख्या स्थिर है।

"विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रमाणपत्रीय, शास्त्री, आचार्य व पीएचडी में 73 विद्यार्थी पंजीकृत हैं। इसमें नेपाल, इटली, स्पेन, म्यामार, भूटान, यूक्रेन, थाईलैंड व कनाडा के छात्र शामिल है।

-प्रो. राम पूजन पांडेय, डीन छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष

- विश्वविद्यालय में विदेशियों के लिए ही संस्कृत विद्या विभाग में तीन वर्षीय सार्टिफिकेट कोर्स संचालित किया जाता है। तीन वर्ष के दौरान विदेशियों को संस्कृत के व्याकरण सहित अन्य जानकारी दी जाती है। संस्कृत प्रमाणपत्रीय कोर्स करने वाले विदेशी छात्र शास्त्री (स्नातक) में दाखिला के लिए अर्ह हो जाते हैं।

-डा. रविशंकर पांडेय, प्राध्यापक संस्कृत विद्या विभाग"

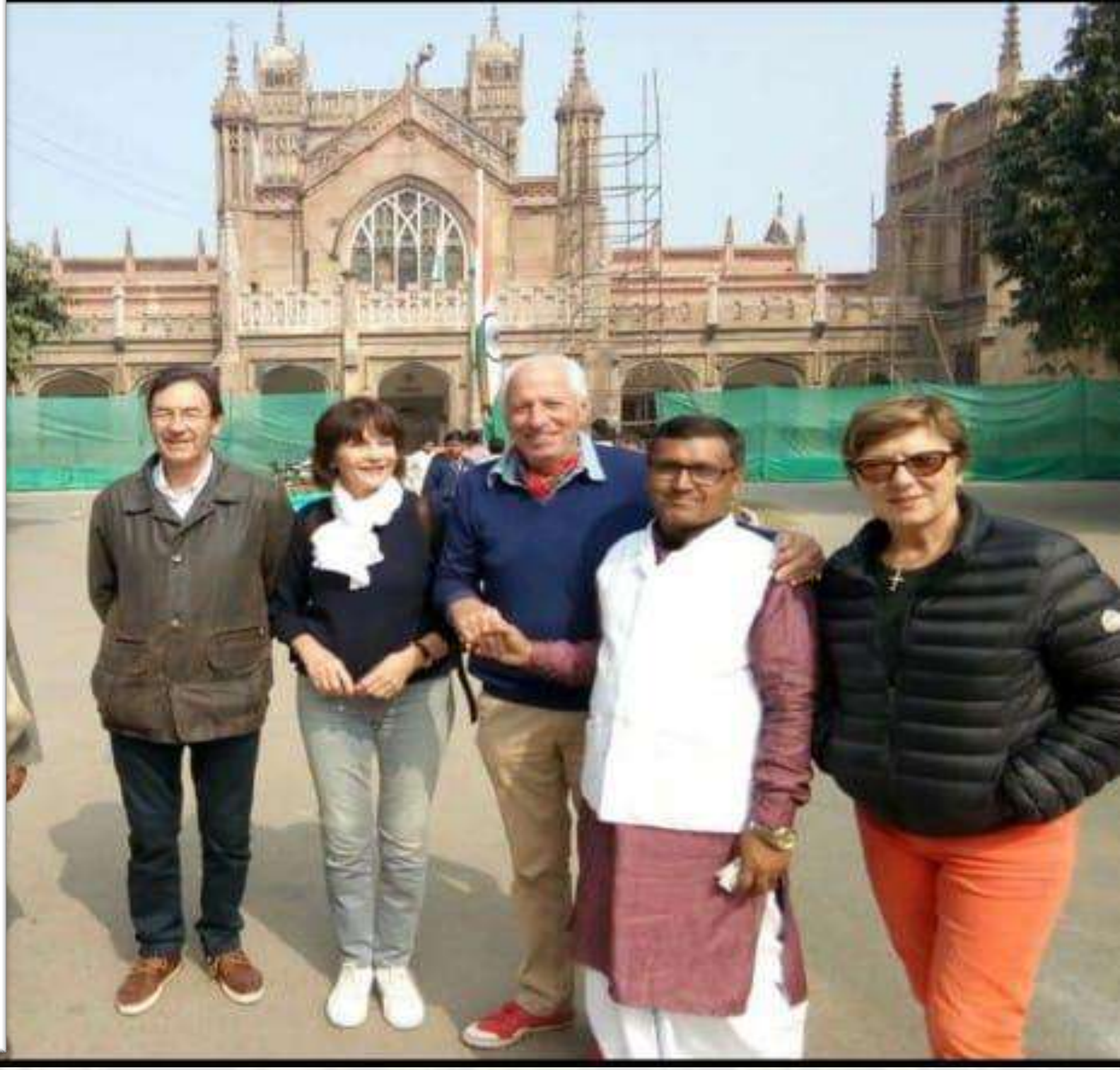

वैदेशिकाः संस्कृतप्रत्याकृष्टाः सञ्जाताः

अन्येषु शिक्षणसंस्थानेषु संस्कृतभाषणं पाठयन् विभागीयछात्रः

विभागीयच्छात्राणाम्-प्रतियोगिपरीक्षासु साफल्यविवरणम्

क्रम सं.	छात्र\छात्रा नामानि	शीर्षकम्
1	आंनद दूबे	NET
2	विकासकुमार पाण्डेयः	NET
3	अमित मिश्रः	JRF
4	अञ्जिका तिवारी	पालिप्राकृत – संस्कृत में कुंभ का महत्व तृतीयः पुरस्कारः
5	कु. कुसुम देवी	काव्य वाचन
6.	शिवम मौर्य	भाषण प्रतियोगिता एवं का. सा. सा. म. प्रथम

विभागीयशोधच्छात्राणां विवरणम्

क्रम सं.	शोधच्छात्राणां		निर्देशकः
1	लोकेश कुमार सिंहः		डॉ. लक्ष्मीकांत झा
2	शिवम शुक्ला		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
3	धनञ्जय पाण्डेयः		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
4	विद्याधर पाण्डेयः		प्रो. रमेश प्रसादः
5	विकासकुमार उपाध्यायः		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
6	अनुज कुमार उपाध्यायः◌ः		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
7	गोमती आचार्यः		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
8	जितेन्द्रधर द्विवेदी		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः
9	अनुराग कुमार पाण्डेयः		डॉ. रविशंकरपाण्डेयः

विगतपञ्चवर्षेषु विभागीयच्छात्राणां नियुक्तिविवरणम्

छात्रनाम	उपलब्धि
विद्याधर तिवारी	बी.पी.एस. सी चित:
ब्रह्माजी द्विवेदी	अध्यापक:
भास्कर पाण्डेय:	अध्यापक:
अनुज उपाध्याय:	अध्यापक:
विकास पाण्डेय:	अध्यापक:
अनुराग कुमार पाण्डेय: जितेन्द्रधर द्विवेदी	अध्यापक: प्राचार्य:(मायानन्दगिरि सं.म.वि.)

विभागीयाः पुरातनाः विशिष्टच्छात्राः

लोकेश कुमार सिंहः

- शिवम शुक्ला
- धनञ्जय पाण्डेयः
- विद्याधर तिवारी
- विकास कुमार पाण्डेयः
- अनुज कुमार उपाध्यायः
- गोमती आचार्यः
- जितेन्द्रधर द्विवेदी
- अनुराग कुमार पाण्डेयः

ब्रह्माजी द्विवेदी
राजकुमारी
भास्कर पाण्डेयः
योगानन्द शास्त्री
शिवानन्द शास्त्री
एच. लूसी गेस्ट
मारिया रूईस
एलियेट हॉकर
युधिष्ठिर धनराजः
याना चेर्निया (वर्तमान छात्रा)
कुचुक (वर्तमान छात्रः)
एन्तोनेला (वर्तमान छात्रा)

विभागस्य प्रबलपक्षाः

- समृद्धाः छात्रसङ्ख्याः
- कुशलाः शिक्षकाः
- सर्वविधिशिक्षणव्यवस्थाः

विभागस्यागामिन्यः योजनाः नूतनसम्भावनाः

- सभागारस्य डिजिटलीकरणम्
- अन्ताराष्ट्रीयसङ्गोष्ठीनामायोजनम्
- समसामयिकविषयेषु शोधप्रोत्साहनम्
- अप्रकाशितपाण्डुलिपीनां विभागपक्षतः प्रकाशनम्

धन्यवादः